नीला लिफाफा
गुलाबी कागज़

कहानी संग्रह

कुसुम नारायण 'नारायणी'

मनसा पब्लिकेशन्स
2/256 विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-२२६०१०
फोन नं०- (0522) 4029598
ईमेल - manasapublications2007@rediffmail.com

पुस्तक का नाम	**नीला लिफाफा गुलाबी कागज़**
प्रकाशक	**मनसा पब्लिकेशन्स** 2/256 विराम खण्ड गोमती नगर, लखनऊ–226010 फोन नं. 0522–4029598
संस्करण	प्रथम –2008
मूल्य	रुपये मात्र– 175/–
सर्वाधिकार सुरक्षित	**मनसा पब्लिकेशन्स** 2/256, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010

ISBN- 978-81-906214-8-9

NEELA LIFAFA
GULABI KAGAZ

By- Kusum Narayan 'Narayani'

अपनी बात

मेरी कहानियाँ अपने अनुभवों और अहसासों को जीवंत बनाने की अंत:प्रेरणा में किये गये चिन्तन के परिणाम की कहानियां है।

रचनाधर्मिता के माध्यम से मिली समझ मुझे ओढ़ायी गई नैतिकता से युक्त होकर निजी नैतिकता में जीने की शक्ति और साहस प्रदान करती है।

जब विषमताओं में से कोई निष्ठा या विश्वास उभर आये या दया करुणा की कोई कड़ी चमक जाये या सुन्दर शिष्ट सम्भ्रांत परिवेश के नीचे छिपी कालिमा को उभार लाये या आदर्शों के गहन गम्भीर उदघोषों के नीचे दबी बेबस करुण सिसकी उभार दे वास्तव में वही साहित्य है।

मुझे दलित, महिला, वामपंथी, पूंजीवादी जैसे खेमे में बंटे साहित्य में रुचि नहीं साहित्य जब समग्रता से विकसित होता है तभी वह अपने दर्पण में समाज का सही प्रतिबिम्ब दिखा सकता है।

ये कहानियां काल्पनिक नहीं, देखा-सुना अनुभूत किया सच है। न आडम्बर है न शब्दजाल न काव्यात्मकता, जो मन को स्पर्श कर गया वही कहानी बन गया।

आशा है 'नीला लिफाफा गुलाबी कागज' जिसमें मोबाइल युग से पहले की कहानियां है सुधि पाठकों को आयेगी।

कुसुम नारायण 'नारायणी'

अनुक्रम

१. अपने-अपने आसमान..... 9

२. सपना उनका भी..... 16

३. प्रतीक्षा..... 22

४. रसानुभूति..... 29

७. बच्चा मेरा है..... 36

६. मधु बना विष..... 42

७. नीला लिफाफा गुलाबी कागज़..... 51

८. पहाड़ पर चमकते तारे..... 64

९. जिंदगी अपनी-अपनी..... 70

१०. हत्यारिन..... 80

११. शोपीस..... 91

१२. गुझिया मीठी है..... 96

१३. प्रतिध्वनि..... 103

१४. लक्ष्मी..... 110

१५. गांठ..... 117

१६. सिद्ध पुरुष..... 126

अदित्य एवं सुषमा को

करना ठीक नहीं समझते।

बुआ अपने सौम्य, सुंदर, सुयोग्य भतीजे को पागलपन के कगार पर लाने के लिये स्वयं को दोषी मानती हैं, आंसू बहाती हैं कहती हैं–"काश मुझे सपना भी होता कि मेरा प्यार यह रूप लेगा मेरे लाड की ऐसी परिणति होगी....।"

•••

नीला लिफाफा गुलाबी कागज़

सुरंग आती रहती और नीलिमा उन्हें गिनती जाती, उसे यों तो अच्छी तरह मालूम है कि कालका से शिमला जाने में कितनी सुरंगों से गुज़र कर जाना पड़ता है, फिर भी यह उसकी बचपन की आदत है। बचपन में इस रास्ते पर जाते हुये सुरंग का गिनना, डरने का अभिनय करना नीलिमा और उसके भाई–बहनों का खेल होता और लगातार खिड़की से बाहर निहारते जाते। अब इन पहाड़ों में न वह हरियाली रही न वह सुषमा।

उदासी से उन पहाड़ों का जादू याद करते सुरंग आने पर अन्दर देखने लगी थी, सामने बैठी युवती को अपनी ओर देखते पाया तो लगा पहले कभी देखा है। कौन हो सकती है, सोचते–सोचते विस्मृति की सुरंग पार कर स्मृति के उजाले में याद आया.....यह युवती तो मेघा है.....मेघा तभी बड़ा पहचाना सा चेहरा लग रहा है।

उसके होठों पर भी मुस्कान आई, वह पहले भी उसकी ओर देखती रही थी।

"आप नीला चाची हैं न, नीति की मम्मी?"

"और तुम मेघा हो न? तुम्हें देखे तो एक जमाना बीत गया।"

"फिर भी मेरी याद आ गई आपको चाची!"

"याद तो रहती है बेटा..... तुम नीति की सहेली थीं–इतने वर्षों तुम्हारा आना–जाना रहा नीति के पास तो हम भूले तो नहीं पर कुछ परिवर्तन तो हो ही गया तब किशोरी कन्या थी तुम, फिर विवाह हुआ। मुझे

देख कैसी दुबली पतली थी, छरहरी काया और अब इतनी मोटी हो गई...।

"अरे चाची आप मां को देखें तो पहचाने भी न। वह तो आपसे भी बढ़कर हैं ऊपर से मोटा चश्मा और सफेद बाल, उठा भी नहीं जाता। उनसे आप में तो थोड़ा बहुत बदलाव ही आया है।"

"और हाल बता न, जब से तुम लोगों ने जयपुर छोड़ा लौट कर गई ही नहीं, कुछ पता ही नहीं लगा, कहां हो, कैसे हो.....? दो बच्चे हैं न तब सुना था।"

"जी शिल्पी और सत्यम यहीं आपके सामने ही बैठे हैं इतना बोलते हैं कि आपको सोने भी न दें।" दोनों बच्चों ने विनम्रता से नीलिमा के पैर छूये हैं। नीलिमा ढेर–सा आशीर्वाद बरसाती हुई पूछ रही है "शिमला घूमने जा रही हो..... या..... पोस्टिंग है इनके पापा का क्या नाम था..... संजय था न.....! हाँ मुझे भूला नहीं है।"

"जी" मेघा ने अनमने से कहा।

"शिमला, मौसी के पास घूमने जा रही हूँ।"

"अकेली ही जा रही हो..... संजय कहां पर है?"

"दिल्ली में हैं"

"दिल्ली में..... शादी के समय भी वहीं था यह बहुत अच्छा है, एक स्थान पर रहें तो बच्चों की पढ़ाई में व्यवधान नहीं पड़ता..... संजय अब किस पद पर हैं?"

मेघा ने कोई उत्तर न दे अपनी सहेली नीति के विषय में पूछना शुरू किया "नीति कहां पर है कुछ कर रही है या, मस्ती कर रही है कहती थी मुझे तो शादी के बाद नौकरी करना ठीक नहीं लगता न गृहस्थी ही ठीक हो पाती है न बच्चों पर ही ध्यान दिया जा सकता है..... आदमी करे भी तो कितना! पुरूष तो काम से आकर आराम से पैर पसार कर पड़ जायेगा और हमें घर भी संभालना और बच्चे भी देखना, आते ही उनकी सेवा में तत्पर

न हो तो त्यौरी चढ़ जाये.....मुझे प्रायः उसका कहना याद आता।"

"लेकिन अब उसका दर्शन बदल गया है।"

"अब तो वह भी स्कूल में पढ़ाने लगी है, कहती है इतना पढ़ा लिखा तो कुछ काम कर लूं, पैसा होगा तो हम कुछ और सुविधायें जुटा लेंगे, काफी समझदार हो गई है।"

"चाची समय के साथ विचार भी बदल जाते हैं।"

"बेटी पता देना अपना–उधर मेरा एक भतीजा रहता है, अरे वही सोनू था न, बड़ा शरारती उधमी जब भी आता तब घर में तूफान मचा देता था ..... उसी से मिलने कभी–कभी जाती हूँ। तुम्हें याद हैं न उसकी हरकतें नीति और शक्ति की नाक में दम कर देती थीं। उसकी सहेलियाँ भी पनाह मांगती थी। अब देखो तो देखती ही रह जाओगी। एक प्रसिद्ध प्राइवेट कम्पनी में मैनेजर है, बीस हजार वेतन दस हजार का फ्लैट और 'पर्क' ऊपर से। घर की सजावट तो देखते ही बनती है, लगता है घर नहीं किसी बड़े होटल का सूट है। लचकदार पर्दे झालर वाले, मार्बल का फर्श, ईरानी कालीन, चमचमाता फर्नीचर, सारी क्रॉकारी बोन चाइना की, कट ग्लास के सामान और बनावटी पेड़–पौधे बाहर से मंगाये हैं। ब्रिगेडियर की बेटी से ब्याह किया है...खूब अच्छा रख रखाव है, घर देखते ही बनता है उनका। ओह हां! अपना पता और फोन नं0 देना.... अब शिमला का स्टेशन आने ही वाला है।

नीला अपने भतीजे की समृद्धि के बखान में भूल ही गई थी कि वह किसी का पता नोट करने जा रही थी। अपने पर्स से पेन और डायरी निकाली, "लाइये मैं लिख देती हूँ" मेघा ने पता लिख दिया।

"संजय का पूरा नाम तो बताना, मुझे तो बस प्यार का नाम संजय ही याद है" नीला ने पूछा।

"आप मेरा ही लिख लीजिये फ्लैट नं0, बिल्डिंग नम्बर और हमारे मार्ग का नाम लिख दिया है– मैं आपको पूरा नक्शा ही बना देती हूँ।"

नीला को कुछ अटपटा सा लगा।

"नम्बर याद रहे तो पहुंच ही जाऊँगी फिर भी संजय का नाम और सर नेम भी तो भूल रही हूँ, किसी से पूछूँगी क्या?"

"मेरे बेटे सत्यम और बेटी शिल्पा से वहां बिल्डिंग में सब परिचित है और संजय से अपरिचित– मेरा तलाक हो चुका है चाची" उसने कठिनता से कहा धीरे से किन्तु स्थिर शब्दों में कहे बोल स्तब्ध कर गये।

शिमला से आने के सप्ताह भर बाद ही एक विवाह समारोह में नीलिमा को दिल्ली जाना था। मेघा का पता उसके पास था किन्तु वह जनकपुरी से बहुत दूर नोएडा में ठहरी थी। उसकी बेटी नीति भी पूना से अब यहीं आ गई थी। विवाह के घर की गहमा–गहमी में उसे मेघा के विषय में बात करने का समय तो न मिला था अतिथियों व सम्बन्धियों से बातचीत, गीत–संगीत, भोज आदि के बाद रात्रि में विवाह समारोह आरम्भ हुआ। नीति अपनी मां के पास ही बैठी विवाह की रीतियों को देख रही थी।

कन्यादान होने लगा तो कुछ आवाजें उठीं "पडिंत जी अब बराबरी का जमाना है आप कन्यादान करवाते हैं.....।"

पडिंत ने कहा "इसके मूल में कुछ तत्व होगा..... कन्यादान विवाह की एक महत्त्वपूर्ण रीति है जिसके तहत कन्या का पिता या अभिभावक जल तर्पण कर कन्या का हाथ वर के हाथ में देता है। वर से कहते हुये कि– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पथ से नहीं हटेगा वही संगिनी है, जिसका वर सकारात्मक उत्तर देता है। यह महादान माना गया है कन्या का महत्त्व दर्शाता है। कन्यादान के बाद विवाह संस्कार शुरू होता है।"

पवित्र अग्नि को ईश्वरीय प्रेक्षक माना जाता है इस संस्कार के तहत पृथ्वी आकाश तथा स्वर्ग को नैवेद्य दिया जाता है। तीसरे संस्कार में पाणिग्रहण वैदिकमन्त्रों का उच्चारण करता है। सप्तपदी संस्कार में कन्या वर के आगे उत्तरपूर्वी दिशा में मन्त्रों का उच्चारण करते हुये चलती है, चार फेरों के बाद वर कन्या के आगे चलते हुये अग्नि के फेरे लेता है, सात फेरों

के पूरा होते ही विवाह संस्कार पूर्ण हो जाता है। विवाह संस्कार में जीवन यात्रा के सहयात्री जो सब वचन शपथ रुप में ग्रहण करते हैं उसे दोनों ओर के पंडित पढ़ते हैं और वर–कन्या से दुहराने को कहते हैं उन्हें सुनकर लोग गंभीरता से लेते कहाँ हैं। आजकल उल्टे हंसने लगते हैं, पंडितों पर भी और उनके सुनाये वचनों पर भी।

जैसे....., सन्ध्या समय पत्नी को अकेले न छोड़ें तो नाइट शिफ्ट कैसे हो, पत्नी को छोड़कर रमणीक स्थान में नहीं जाना हो तो टूर कैसे करें. .....।

खित्र मन से नीति सोच रही थी, आजकल वचनों की महत्ता पर विचार कोई नहीं करता वह तो महज विवाह की एक आवश्यक रीति मनोविनोद की वस्तु बन कर रह गई है।

"पंडित जी जल्दी करिये" कि गुहार लगाने लगते हैं।

नीलिमा के दिलो–दिमाग पर बस मेघा हावी थी, उसका भव्य विवाह समारोह मंडप में संजय की हंसी, उतावली मेघा से चिपट–चिपट जाना याद आ रहा था, तभी नीति ने धीरे से कहा था– "माँ आप उन्हें देख रही हैं जो बरातियों के साथ चुपचाप बैठे हैं कुछ सोचते से.....।"

"न याद तो नहीं आ रहा है।"

"याद कैसे आ सकता है मां, आपको श्रेया की याद है?"

"वह जो तुम्हारी कालेज की प्यारी सहेली थी?"

"हां वही श्रेया"

वह तो मुझे भूली नहीं बड़ी अच्छी लड़की थी पर कितने ही वर्ष हो गये, कोई हाल नहीं मिला दूर जाने से कोई सम्पर्क ही नहीं रहा।"

"ये वही हैं महादेव..... श्रेया का पति"

"श्रेया का पति, कोई रिश्ता होगा वर से तभी तो रात को समारोह

में बैठा है..... तुम लोग तो बड़ी हंसी उड़ाया करती थीं, वो तो बड़ा स्मार्ट लग रहा है धीर–गम्भीर भी।"

"वह हंसी का पात्र नहीं, श्रद्धा के योग्य भी है माँ"

"क्यों श्रद्धा के योग्य..... ऐसा क्या .....?" नीति ने सुना नहीं शायद हंगामा सा हुआ, वर वधू को अक्षत छिड़कने लोग उठे पर अक्षत छिड़कते हुये भी नीला ने नीति से पूछा– "श्रद्धा के योग्य क्यों ?"

"माँ, इतनी बड़ी पोस्ट पर है जनरल मैनेजर है, बेटा भी नहीं है पर वह सात वर्ष से विधुर रहते हुये बेटी को पाल रहे हैं.....।"

"श्रेया नहीं रही क्या?" मैंने चौकते हुये कहा।

"माँ, अब समझ में नहीं आता प्रेम क्या है? कब प्रस्फुटित होता है? प्रेम विवाह करें या धीरे–धीरे अगरबत्ती की तरह सुख–दुख को झेलते हुए प्रेम की सुवास फैलाते रहें। प्रेम की सुवास–नीले लिफाफे में रखे गुलाबी कागजों की सुगन्ध कहां उड़ गई।"

नीलिमा कह उठी– "संजय का मेघा से तलाक हो गया है जानती है? मुझे अभी शिमला जाते हुये वह ट्रेन में मिली थी।"

नीलिमा, नीति से वर्ष भर बाद मिली थी आज। मेघा के विषय में कहने का समय न मिला था।

"मुझे मालूम है मां। तीन वर्ष पहले यहां थी न, तब मेघा से मिली थी। तलाक तो होना ही था मां, संजय जैसे स्वार्थी व्यक्ति के साथ। मुझे उसके नाम से भी घृणा है।"

नीति विह्वल हो मां को श्रेया के विषय में भी बताने लगी थी। पहले कुछ एक वर्ष नीति भी दिल्ली में ही थी तब वह श्रेया और मेघा से मिलती रही थी। तीनों में काफी अच्छी मित्रता थी।

नीलिमा को वह दिन याद आने लगे जब वे लोग जयपुर में पास–पास रहते थे– मेघा का विवाह तय हो गया है यह जानकर मां उसके

घर बधाई देने गई थी पांच–छह मकान छोड़कर ही उनका घर था। विवाह तय हो गया था सगाई होने वाली थी और विवाह की तिथि भी तय करना शेष था। वह एम.ए. में पढ़ रही थी इसलिए विचार हुआ कि यदि छः महीने बाद विवाह हो तो परीक्षा हो चुकी होगी अन्यथा पढ़ाई में विघ्न पड़ेगा किन्तु दूसरा विचार था कि इतनी प्रतीक्षा करते गर्मियाँ आ जायेगी गर्मी में विवाह का इंतजाम कठिन होता है दूसरे वर के परिवार वाले जल्दी कर रहे थे।

हम लोग बातों में तल्लीन थे तभी डाकिया आया था। दो–तीन पत्रों को किशोर नौकर माँ को पकड़ा गया। एक अर्न्तदेशीय, एक सादा और एक नीला लिफाफा था। मेघा की मां सुनीति ने हंसते हुये कहा "यह लिफाफा मेघा का है रख दे उसके टेबल पर।"

"आपको दूर से ही पता लग गया कि मेघा का पत्र है।"

"हां जी, पता लग जाता है, उनके रोज ही ऐसे ही पत्र आते हैं।"

"कहां से ?"

"संजय के और कहां से आयेंगे! रोज एक पत्र और दूसरे दिन फोन आता है दिल्ली से। नीला लिफाफा और गुलाबी कागज़ होते हैं।"

किशोर ने कहा "खशबू वाले, दीदी चिट्ठी खोलती हैं तो.....।"

"हट, अपना काम कर तू" सुनीति ने हंसकर कहा फिर मेरी ओर देखकर कहा– "मतलब कि कागज पर सुगन्ध रहती है खोलती है तो महक आती है, वही कह रहा है। बस रविवार छोड़ रोज़ ही एक लिफाफा आता है। तभी तो सोचती हूँ, शादी जल्दी ही निपटा दें नहीं तो इतने दिन बेचारा पत्र ही भेजता रहेगा और फोन का खर्चा भी हर महीने हजारों का हो जायेगा.....।"

मेघा की माँ का हर्ष असीम हो उठा था। उनकी मेघा ने कौन सा पुण्य किया था, सोने की गौर पूजी थी या उमा की तरह शंकर को आराधा था जो इतना अच्छा वर मिल रहा था, सुदर्शन, स्मार्ट, अंग्रेजी

माध्यम का पढ़ा–लिखा, एम.बी.ए., अच्छा खानदान, ससुर भी ऊँचे पद पर अफसर, अपना मकान है, अपनी कार है और क्या चाहिये संजय की तो जितनी प्रशंसा की जाये कम है फिर मेघा से इतना प्यार ही सबसे बड़ी चीज होती है।

मेघा नीलिमा की बेटी नीति की सहेली है, मेघा की माँ सुनीति उसकी सहेली है।

लड़की को ऐसा सुयोग्य घर–वर मिल गया जानकर हर्ष प्रकट किया– "बहन कुछ हमारे योग्य काम हो तो अवश्य बताना" औपचारिकतावश नीलिमा ने कहा। मन नीति पर अटक गया पता नहीं मेरी बेटी का भाग्य कैसा हो?

तभी जैसे याद करते हुये सुनीति ने कहा–"श्रेया का भी तो विवाह तय हो गया है– मालूम है न!"

श्रेया, मेघा और नीति कालेज से एक साथ ही थी एक ही विषय ले रखा था यह भी संयोग था।

"हाँ–सुना तो है।" नीलिमा ने कहा।

"देखा..... लड़के को?"

"नहीं तो"

"पता नहीं कैसा है! मेघा कहती है, बस विवाह तो देख सुनकर तय हुआ लेकिन फिर कोई आना न जाना.....चिट्ठी न पत्री.....संजू तो सप्ताह में एक चक्कर लगा जाता है और वह भी दिल्ली में है।"

"हाँ सुना तो है।"

"राम जाने..... पुरातन पंथी लोग दिख रहे हैं नहीं तो आजकल तो विवाह देख–परखकर, प्रेम होने पर तय होने का रिवाज़ हो रहा है, वहां, ऐसी पाबन्दी कौन मानता है। मुझे तो लगता है सिर्फ माँ–बाप के कहने में या दान–दहेज के लालच में आ गया है।"

"श्रेया है तो बहुत अच्छी लड़की....." चिन्तित होकर कहा था।

"अच्छी तो है लेकिन चार महीने से विवाह तय हो और मिलना–जुलना न हो ! अब मेरी मेघा को तो एक–एक बात का पता है कि संजय को खाने में क्या पसन्द है.....कपड़े में क्या पसन्द है– मेघा तो अपने कपड़े गहने भी उसी के पसन्द का ले रही है, परिवार में और लोगों की भी पसन्द–नापसन्द की बात कह देता है मेघा जायेगी तो खुश रह सकेगी। आराम से सामन्जस्य बैठा सकेगी।"

"आप ठीक कहती हैं" मेघा का सौभाग्य विचलित कर रहा था। जाने मेरी नीति का क्या हो।

मेघा आ गई थी, पत्र पढ़कर आई थी। मगन, हर्षित मेरे गले में बाहें डाल दी "चाची जी, संजू की फोटो देखी..... आपको कैसा लगा?"

"बहुत सुंदर जोड़ी रहेगी।"

"इस बार आयेगा तो आपसे मिलवा दूंगी, नीति ने तो देख रखा है।" मेघा संजय की प्रशंसा के पुल बांध रही थी, उधर सुनीति कहती जा रही थी–"अब मेघा जानती है कि ससुर को करेले और अरहर की दाल पसन्द है और सास को चटपटी चीज़ों का शौक है, संजू को तो बस चाइनीज़, नानवेज हो, सूप हो, आइसक्रीम हो यही सब मेघा को भी पसन्द है, दोनों की खूब निभेगी। बड़ी भाग्यवान है मेघा, जो दोनों की एक पसन्द, एक रुचि है मैं तो निश्चिन्त हो गई मेघा की ओर से।"

नीलिमा, मेघा के सौभाग्य पर हर्ष प्रकट करती और अपनी नीति के लिये सहेली सा सौभाग्य पाने की कामना करती रही।

इधर मेघा को पहले पहल बेटी हुई तो इस पर संजय चिढ़ गया और ताना उलाहना देते हुए बोला–"मेरे सब दोस्तों को बेटे हुये हैं एक मैं ही लड़की का बाप बना।"

"इसमें हीनता की कौन–सी बात है तुम व्यर्थ ही परेशान हो रहे

हो। आज कल बेटे–बेटी में कोई अन्तर नहीं समझा जाता, पहले भी पहली बेटी के होने पर खुशी मनाई जाती थी....।" मेघा ने कहा।

"समझने से सच को झूठ तो बनाया नहीं जा सकता है।" संजय बोला।

उधर श्रेया को भी बेटी हुई थी, पर उसकी बेटी घर में हाथों–हाथ ली जा रही थी। कामना अवश्य थी कि एक पुत्र भी घर में होता, किन्तु इसलिये कभी श्रेया को सुनना नहीं पड़ा। बाद में कई वर्ष बाद एक पुत्र हुआ भी तो प्रसव में जाता रहा।

मेघा कभी भी बीमार होती तो घर के काम काज में अन्तर पड़ता इस बात पर भी संजय का माथा चढ़ जाता–"रोज–रोज की बीमारी हमें नहीं अच्छी लगती" वह चीखता।

"बीमारी किसे अच्छी लगती है संजय! क्या मैं जानकर बीमार होती हूँ?" एक बार आठ दिन बुखार में पड़ी रही तब तो संजय का पारा आसमान पर ही चढ़ गया। उस दिन आफिस से आया तो बरस पड़ा–"बच्चे शाम को तैयार नहीं, अभी तक तक स्कूल के कपड़े पहने हुये हैं....।"

"कहा तो था कि बदल लें" कराहते हुये मेघा ने कहा।

"तुम लेटी रहो आराम करो, कहने की क्या जरूरत है? घर भी गंदा, बच्चे स्कूल ड्रेस में... अब मैं तुम्हारा आज्ञाकारी सेवक आ गया हूँ उन्हें तैयार करूं, अपने से चाय–नाश्ता करूं, घर साफ करूं, तंग आ गया हूँ इन हरकतों से।"

"संजू मुझे बुखार है, कितने दिन हो गये एक सौ तीन टम्परेचर है, डॉक्टर को बुला लो बुखार उतर नहीं रहा है.....या मुझे ले चलो डाक्टर के पास.....।"

"परसों देख तो गया है, अब रोज–रोज डॉक्टर बुलाना, दवा लाना मुझे पसन्द नहीं है" कहकर वह बाहर जाने लगा।

मैंने डांटकर कहा–"मुझे उठना है संजय, ऐसे पड़ी रहूंगी तो कैसे काम चलेगा?"

"अभी तो मुझे कहीं जाना है, कल बुला लेंगे" वह कपड़े बदल कर थोड़ा आराम कर बाहर चला गया।

बच्चे क्या खायेंगे, उसने नहीं पूछा, न मेरे लिये ही.....बाद में शिल्पी से ब्रेड मंगवाया वही सबने खाया।

यह एक उदाहरण दे रही हूँ प्रेमी पति का जिस पर माँ फिदा थीं, बलिहारी जाती थीं। स्त्री हो या पुरूष संबंध सिर्फ प्रेम और चाहत पर निर्भर नहीं होता। उसके पैरों के नीचे निश्चिंत सुरक्षा की कठोर जमीन भी होनी चाहिये। इसीलिये विवाह होता है पर संजय इतना स्वार्थी हो गया था उसमें कर्तव्य भावना तो रह ही नहीं गई थी।

मैं तो साधारण उदाहरण दे रही थी अब एक उदाहरण दूसरा दे रही हूँ–"श्रेया के पति ने कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया वह बेचारी तो प्रायः बीमार रहती थी उस दिन उसे भी ज्वर था कई दिनों से अस्वस्थ थी।

उसके पति महोदय को आदत थी आफिस से घर आते ही चाय पीने की। उसने उठकर पानी चढ़ाया तभी वह आ गया "तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं थी तो यह सब क्यों किया?" उसने स्वयं चाय बनाई उसे भी पिलाई। उसे आवश्यक मीटिंग में जाना था फिर भी बेटी को दूध पिलाया। "सबेरे के लिये ड्रेस तैयार है।" श्रेया के पति ने पूछा।

"नहीं.... प्रेस करना है...।"

"ठीक है मैं आकर कर दूंगा, तुम कुछ न करना, बहुत जरुरी मीटिंग है। बस मैं देखने आ गया था।"

उसका घर मेरे घर से बहुत छोटा था। देवर नन्द भी हमेशा कोई न कोई आये रहते थे। अकेले बहुत ही कम रहते, तब उसे देखकर लगता कि उसके अपने टेलेन्ट के लायक यह घर नहीं था।

दोनों की रुचियाँ भिन्न थीं। श्रेया को लेखन का, चित्रकला का, अध्ययन का शौक था वह अपने घर को सजा–संवार कर रखना चाहती थी लेकिन इसके लिये मंहगी वस्तुओं की मांग नहीं थी बस साफ–सुथरा कलात्मक रुप से सजा घर..... उधर महादेव ने कपड़े उतारे बेड पर फेंके, घर भी हर समय रिश्तेदारों से भरा रहता कोई कुर्सी पर सो रहा है, कोई बेड पर खा रहा है, कोई कालीन पर पेपर फाड़कर फेंक रहा है। श्रेया साफ करती रहती यानि वैचारिक मेल नहीं था फिर भी दोनों में मन का मेल था एक दूसरे की पसन्द को जानते, काम को समझते और प्रतिभा का आदर करते।

संजय जहां स्वच्छंद प्रकृति का था उसे न माता–पिता की चिन्ता थी न भाई बहन की, स्वयं घूमना–फिरना गहने कपड़े पर खर्च करना सिनेमा और होटल में पैसा उड़ाना उसे परिवार के लोगों की बिल्कुल चिन्ता न रहती प्रथम आवश्यकता उसके अपने मन की होती।

श्रेया के जीवन में त्याग ही त्याग था किन्तु उसका त्याग व्यर्थ नहीं गया। श्रेया अपने पति की असुविधा को सोचकर चिंतित थी, उसे ठंडी रोटी खानी पड़ रही है–विविध प्रकार का व्यंजन सीखती, बनाती। श्रेया अब कुछ करने में असमर्थ हो रही थी।

प्रेम के रंग में रंग गये थे दोनों। महादेव ने श्रेया की प्रतिभा को पहचान देख समझकर पूर्ण आदर देना चाहा था, किन्तु भाग्य की विडम्बना श्रेया को क्षय रोग ने आ घेरा महादेव ने सेवा में अपने को समर्पित कर दिया तन मन धन से उसकी सेवा की।

"माँ वह दूर जाकर भी महादेव के समीप है। ये छोटी छोटी घटनायें ही कभी दिलों में कड़वाहट पैदा देती है तो कभी प्रेम रस से एक दूसरे को सराबोर कर देती हैं जब पति या पत्नी कोई भी एक दूसरे की भावनाओं को समझने में जानकर भूल करता है तभी ऐसी स्थिति आ जाती है कि व्यक्ति स्वयं को चित कर देना चाहता है या एक–दूसरे से दूर चला जाना चाहता है।"

नीति कहे जा रही थी और नीलिमा उन दोनों के लिये दुखी हो रही थी। एक के संसार से जाने से दूसरे की दुनिया वीरान हो गई थी और दूसरे की जिंदगी संसार में रहते हुये भी पूरी तरह उजड़ चुकी थी।

दुख से व्याकुल हो मैंने नीति को अंक में भर लिया और उसका माथा चूमते हुये कहा–"तुम्हारी बगिया इसी तरह महकती रहे और उसमें खिले फूल सदा मुस्कराते रहें, खिलखिलाते रहें।"

"एकाएक पूछ बैठी श्रेया की बेटी से मिली कभी....।"

"हां माँ! दिल्ली पांच वर्ष बाद लौटी तो बरबस श्रेया की याद आई मन में एक वेदना सी उठी कि शायद अब उसकी बेटी की सौतेली माँ हो। घर तो वही पुराना था पर मुझे लगता था कि अन्दर जाते ही मुझे श्रेया की बड़ी सी तस्वीर दिखेगी चन्दन की माला से सुशोभित.....पर कहीं कोई तस्वीर नहीं थी, श्रेया की बेटी श्रुति से पूछा.....मां की कोई तस्वीर ....." "नहीं मौसी" वह विह्वल स्वर में धीरे से कह उठी –"पापा कहते है मुझे ऐसा लगता है माँ यहीं हैं।"

श्रेया महादेव की सांसों की सुगन्ध में बस चुकी थी।

•••